

सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-7: जनजातियाँ, खानाबदोश और
एक जगह बसे हुये समुदाय



जनजाती

मध्यकाल में बड़े गांवों, कस्बों और शहरों में रहने वाले भारतीय समाज में बड़े पैमाने पर राजा, शाही परिवारों के सदस्य, रईस, सैनिक, व्यापारी, व्यापारी, बैंकर, पुजारी, कारीगर और किसान शामिल थे। समाज में लोग वर्ण या जाति व्यवस्था द्वारा शासित थे। जबकि ब्राह्मणों और क्षत्रियों को कई विशेषाधिकार प्राप्त थे, अछूतों के साथ भेदभाव किया गया था। मध्यकाल के दौरान, सामाजिक मतभेद और बढ़ गए और अमीर और गरीब के बीच की खाई और गहरी हो गई। इसके अतिरिक्त नगरों और नगरों में रहने वाले समाज में अन्य सामाजिक व्यवस्थाएँ भी विद्यमान थीं। इन समाजों ने ब्राह्मणों द्वारा बनाए गए किसी भी अनुष्ठान और नियमों का पालन नहीं किया। वे भी विभिन्न जातियों में विभाजित नहीं थे। इन समाजों को आम तौर पर जनजाति कहा जाता था और उनकी अपनी अलग धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान थी।

अक्सर ऐसे समाजों को जनजाति के सदस्य नातेदारी के बंधन से जुड़े होते थे। कई जनजातियाँ खेती से अपना जीविकोपार्जन करती थीं। कुछ दूसरी जनजातियों के लोग शिकारी, संग्राहक या पशुपालक थे। कुछ जनजातियाँ खानाबदोश थीं इस उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में कई बड़ी जनजातियाँ फली-फूली।

जनजातीय लोग कौन थे

समकालीन इतिहासकारों और मुसाफिरो ने जनजातियों के बारे में बहुत कम जानकारी दी है जनजातीय लोग भारत के लगभग हर क्षेत्र में पाए जाते थे इनका इलाका और प्रभाव समय के साथ-साथ बदलता रहता था। पंजाब में खोखर जनजाति तेरहवीं-चौदहवीं सदी के दौरान बहुत प्रभावशाली थी।

यहाँ बाद में गक्खर लोग ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए। उनके मुखिया , कमाल खान गक्खर को बादशाह अकबर ने मनसबदार बनाया था। उत्तर-पश्चिम में एक और विशाल एवं शक्तिशाली जनजाति थी -बलोच। ये लोग अलग अलग मुखियों गड़रिये की जनजाति रहती थी। उपमहाद्वीप के सुदूर उत्तर-पूर्वी भाग भी नागा , अहोम और कई दूसरी जनजातियों का पूरी तरह प्रभुत्व था।

बिहार और झारखंड में बारहवीं सदी तक चेर सरदारशाहियों का उदय हो चुका था। कर्नाटक और महाराष्ट्र की पहाड़ियाँ-कोली, बेराद तथा भीलों की बड़ी जनजाति पश्चिमी और मध्य भारत में फैली

हुई थी। मौजूदा छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में गोड़ लोग बड़ी तादाद में फैले हुए थे।

जनजातीय समाजों की कुछ मुख्य विशेषताएं हैं:

- जनजातीय समाज के सदस्य नातेदारी बंधन से जुड़े थे।
- जबकि कुछ आदिवासी समाज शिकारी और संग्रहकर्ता थे, कुछ लोग खेती करते थे।
- कुछ समाज घुमंतू स्वभाव के थे क्योंकि वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे।
- एक जनजातीय समूह संयुक्त रूप से भूमि और चरागाहों का स्वामित्व रखता था जो विभिन्न घरों में उनके अपने रीति-रिवाजों और विश्वासों के अनुसार विभाजित किए गए थे।
- जनजातियाँ ज्यादातर वनाच्छादित क्षेत्रों, पहाड़ियों और रेगिस्तान में रहती थीं, जहाँ आमतौर पर लोग नहीं रहते थे।
- जनजातीय समाज आमतौर पर स्वतंत्र रूप से रहना और अपनी संस्कृति को संरक्षित करना पसंद करते थे।



प्रमुख जनजातियाँ

चूंकि आदिवासी लिखित अभिलेख नहीं रखते हैं और उनका रखरखाव नहीं करते हैं, इसलिए हमारे पास उनके इतिहास के बारे में समृद्ध जानकारी नहीं है। हालांकि, आदिवासियों ने अपनी समृद्ध संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित रखा, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं। इतिहासकारों ने अब जनजातीय समुदायों की संस्कृति को समझने के लिए मौखिक परंपराओं का तेजी से उपयोग करना शुरू कर दिया है। मध्ययुगीन काल में कुछ महत्वपूर्ण जनजातियाँ थीं:

- तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी के दौरान पंजाब में खोखर जनजाति।
- बाद में, गक्खर बहुत महत्वपूर्ण हो गए। इस जनजाति के मुखिया कमाल खान गक्खर अकबर के दरबार में मनसबदार थे।

- सिंध और मुल्तान क्षेत्रों में, लंगा और अर्धुन मुगलों द्वारा पराजित होने तक प्रमुख जनजातियां थीं।
- बलूचियां उत्तर-पश्चिम भारत में एक शक्तिशाली जनजाति थी और कई छोटे कुलों में विभाजित थी। प्रत्येक कबीला एक अलग प्रमुख के अधीन था।
- उपमहाद्वीप के उत्तर पूर्वी भाग में अहोम और नागाओं का प्रभुत्व था।
- बिहार में चैरो जनजाति और मुंडा और संथाल कुछ अन्य जनजातियां थीं जो उड़ीसा और बंगाल में रहती थीं।
- कोली महाराष्ट्र, कर्नाटक और गुजरात के ऊंचे इलाकों में बसे हुए थे।
- गोंड आज के छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में रहते थे।
- दक्षिण भारत में, कोरागा, वेटार और मारवाड़ महत्वपूर्ण जनजातियाँ थीं।



खानाबदोश जनजातियों के लिए आजीविका का स्रोत

- खानाबदोश जनजाति के लोग अपने परिवार और मवेशियों के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे।
- उन्होंने दूध और अन्य पशुचारण उत्पादों का सेवन किया।
- उन्होंने किसानों से दुग्ध उत्पादों, घी और ऊन का अनाज, कपड़े और अन्य सामानों का आदान-प्रदान भी किया।
- खानाबदोश जनजातियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने के अलावा इन उत्पादों को मुनाफा कमाने के बाद दूर-दराज के देशों में बेच दिया जाता था।
- बंजारा मुख्य खानाबदोश व्यापारिक जनजाति थे। वे टांडा नामक एक कारवां में चले गए।

- इनका उपयोग अलाउद्दीन खिलजी द्वारा शहर के बाजारों में अनाज के परिवहन के लिए किया जाता था।
- सैन्य अभियानों के दौरान सेना के जवानों को अपने बैलों पर अनाज पहुंचाने के लिए मुगलों द्वारा बंजारों का भी इस्तेमाल किया जाता था।
- कई खानाबदोश जनजातियों ने पशुओं और घोड़ों जैसे जानवरों को धनी लोगों को पाला और बेचा। इनके अलावा कई जनजातियों ने पुआल चटाई, रस्सी और बोरे भी बेचे।
- खानाबदोश जनजातियों के कुछ लोग मनोरंजन करने वाले भी थे जिन्होंने अपनी आजीविका कमाने के लिए विभिन्न कस्बों और गांवों में प्रदर्शन किया।

खानाबदोश चरवाहे अपने जानवरों के साथ दूर-दूर घूमते थे। उनका जीवन दूध और अन्य पशुचारी उत्पादों पर निर्भर था। वे खेतिहर गृहस्थों से अनाज, कपड़े, और ऐसी ही चीजों के लिए ऊन, घी इत्यादि का विनियम भी करते थे। बंजारा लोग सबसे महत्वपूर्ण व्यापारी-खानाबदोश थे। उनका कारवाँ 'टांडा' कहलाता था। कई पशुचारी मवेशी और घोड़ों, जैसे जानवरों को पालने-पोसने और भ्रमण करते थे।

नई जातियों का उदय

इस समय एक दिलचस्प विकास यह था कि जाति व्यवस्था के भीतर कई छोटी जातियों या जातियों का उदय हुआ क्योंकि विभिन्न प्रकार के कौशल वाले लोगों की आवश्यकता थी। कई जातियों और जनजातियों को जातियों के रूप में वर्णों में ले जाया गया। कुशल कारीगरों, लोहारों और राजमिस्त्रियों को ब्राह्मणों द्वारा अलग-अलग जातियों के रूप में मान्यता दी जाने लगी।

ग्यारहवीं शताब्दी में राजपूतों का कुल क्षत्रियों में शक्तिशाली हो गया। वे हूण, चालुक्य, चंदेल आदि जैसे विभिन्न समूहों से संबंधित थे। इनमें से कुछ समूह पारंपरिक रूप से जनजातियों का हिस्सा थे।

शासकों के रूप में राजपूतों के उदय ने अन्य जनजातियों को प्रेरित किया। इसलिए ब्राह्मणों की सहायता और समर्थन से कई जनजातियाँ जाति व्यवस्था का हिस्सा बन गईं। हालाँकि, केवल प्रमुख आदिवासी परिवार ही शासक वर्ग में शामिल होने में सक्षम था।

पंजाब, सिंध और उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत की कई प्रमुख जनजातियों ने इस समय तक इस्लाम स्वीकार कर लिया था। उन्होंने जाति आधारित समाज को नकार दिया।



इस अवधि के दौरान दो मुख्य जातियाँ थीं:

गोंड

- गोंड गोंडवाना नामक एक भारी वन क्षेत्र में रहते थे- एक ऐसा देश जिसमें गोंड रहते थे।



- वे झूम खेती करते थे जिसमें वन क्षेत्र के एक हिस्से को काट कर जला दिया जाता था। इसके बाद फसल को राख में बो दिया गया। जब कुछ वर्षों के बाद मिट्टी ने अपनी उर्वरता खो दी, तो जंगल के एक और हिस्से को साफ किया गया और उसी तरह से खेती की गई।
- गोंड छोटे कुलों में विभाजित थे और प्रत्येक कबीले का अपना शासक था। दिल्ली सल्तनत के पतन के समय, कई बड़े गोंड राज्य विकसित होने लगे। उदाहरण के लिए गढ़ा कटंगा के गोंड साम्राज्य में लगभग 70,000 गाँव थे।
- गोंड साम्राज्य विभिन्न गढ़ों में विभाजित था जो एक गोंड वंश द्वारा नियंत्रित थे।
- गढ़ चौरासी नामक 84 गांवों की इकाइयों में विभाजित था। चौरासी को आगे बहरोटों में विभाजित किया गया था जो 12 गांवों से बने थे।
- जैसे-जैसे गोंड राज्य बड़ा होता गया, शासकों द्वारा ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिया गया और समाज विभिन्न जातियों में विभाजित होने लगा। गढ़ कटंगा के गोंड राजा अमन दास ने

अपने बेटे दलपत राय का विवाह महोबा के चंदेला राजपूतों की बेटी राजकुमारी दुर्गावती से किया।

- दलपत राय की मृत्यु के बाद, एक बहादुर और योग्य शासक रानी दुर्गावती ने अपने नाबालिग बेटे की ओर से शासन करना शुरू किया।
- 1565 में, आसफ झा के नेतृत्व में मुगल सेना द्वारा करघा कटंगा पर हमला किया गया था। रानी दुर्गावती ने कड़ा प्रतिरोध किया लेकिन हार गईं।



- कई कारणों से गढ़ कटंगा का विलय हुआ। यह एक समृद्ध राज्य था जो पड़ोसी राज्यों को जंगली हाथियों को बेचकर समृद्ध हुआ।
- मुगलों ने अपनी हार के बाद कई कीमती सिक्कों और हाथियों पर कब्जा कर लिया।
- उन्होंने राज्य के एक हिस्से पर कब्जा कर लिया और चंद्र शाह (पिछले राजा के रिश्तेदार) को शेष राज्य पर शासन करने की अनुमति दी।
- गोंड राज्य बाद में कमजोर हो गया क्योंकि वे बुंदेलों और मराठों के खिलाफ सफलतापूर्वक खड़े नहीं हो पाए।

अहोम

- ये आदिवासी लोग तेरहवीं शताब्दी में वर्तमान म्यांमार से ब्रह्मपुत्र घाटी में चले गए।



- उन्होंने सोलहवीं शताब्दी में छुटिया और कोच-हाजो के राज्यों को मिलाकर एक नया राज्य बनाया। उन्होंने कई जनजातियों को भी हराया और एक बड़े राज्य का निर्माण किया।
- अहोम सैन्य रूप से सफल रहे क्योंकि वे 1530 की शुरुआत में ही आग्नेयास्त्र बना सकते थे। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक, वे गन पाउडर और कैन्नन बना रहे थे।
- 1662 में, मीर जुमला के नेतृत्व में मुगल सेना ने अहोमों को हराया। हालांकि, मुगल नियंत्रण वहां लंबे समय तक नहीं चल सका।



- अहोम राज्य बेगार पर निर्भर था। काम करने के लिए मजबूर किए गए श्रमिकों को 'पाइक' के रूप में जाना जाता था।
- प्रत्येक राज्य को बारी-बारी से एक निश्चित संख्या में पाइक भेजने होते थे।
- युद्ध की अवधि के दौरान सभी वयस्क पुरुषों को सेना में सेवा देना आवश्यक था। जब युद्ध नहीं लड़े, तो उन्होंने बांध, भवन और अन्य सार्वजनिक भवनों का निर्माण किया। अहोमों ने चावल की खेती की एक नई विधि की शुरुआत की।
- अहोमों का समाज विभिन्न कुलों या खेल में विभाजित था। खेल ने कई गांवों को नियंत्रित किया।
- किसान को भूमि ग्राम समुदायों द्वारा दी गई थी। राज्य में पड़ोसी राज्यों से कारीगर आते थे।
- अहोम अपने आदिवासी देवताओं की पूजा करते थे। हालांकि, बाद में ब्राह्मणों का प्रभाव बढ़ गया और उन्हें राजा द्वारा भूमि और मंदिर प्रदान किए गए।
- सिब सिंह के शासनकाल के दौरान, हालांकि हिंदू धर्म एक प्रमुख धर्म बन गया था, फिर भी अहोम अपनी धार्मिक प्रथाओं का पालन करते थे।

- अहोम समाज इस अर्थ में परिष्कृत था कि विद्वान लोगों का सम्मान किया जाता था और साहित्यिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाता था। संस्कृत की कई महत्वपूर्ण कृतियों का स्थानीय भाषा में अनुवाद किया गया। बुरंजियों जैसी ऐतिहासिक रचनाएँ भी लिखी गईं।

SHIVOM CLASSES
8696608541

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 102)

प्रश्न 1 निम्नलिखित में मेल बिठाये :-

(क) गढ़	खेल
(ख) टांडा	चौरासी
(ग) श्रमिक	कारवाँ
(घ) कुल	गढ़ कटंगा
(ङ) सिब सिंह	अहोम राज्य
(च) दुर्गावती	पाइक

उत्तर -

(क) गढ़	चौरासी
(ख) टांडा	कारवा
(ग) श्रमिक	पाइक
(घ) कुल	खेल
(ङ) सिब सिंह	अहोम राज्य
(च) दुर्गावती	गढ़ कटंगा

प्रश्न 2 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:-

- वर्गों के भीतर पैदा होती नयी जातियाँ _____ कहलाती थीं।
- _____ अहोम लोगों लिखी गई ऐतिहासिक कृतियों थीं।
- _____ ने इस बात का उल्लेख किया है कि गढ़ कटंगा में 70,000 गाँव थे।
- बड़े और ताकतवर होने पर जनजातीय राज्यों ने _____ और _____ को भूमि अनुदान दिए।

उत्तर –

1. वर्गों के भीतर पैदा होती नयी जातियाँ श्रेणियाँ कहलाती थीं।
2. बुरंजी अहोम लोगों लिखी गई ऐतिहासिक कृतियों थीं।
3. अकबरनामा ने इस बात का उल्लेख किया है कि गढ़ कटंगा में 70,000 गाँव थे।
4. बड़े और ताकतवर होने पर जनजातीय राज्यों ने मंदिर बनवाए और ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिए।

प्रश्न 3 सही या गलत बताइए:-

- (क) जनजातीय समाजों के पास समृद्ध वाचक परंपराएँ थीं।
- (ख) उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में कोई जनजातीय समुदाय नहीं था।
- (ग) गोंड राज्यों में अनेक नगरों को मिला कर चौरासी बनता था।
- (घ) भील, उपमहाद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में रहते थे।

उत्तर –

- (क) जनजातीय समाज के पास समृद्ध वाचक परंपराएँ थीं। (सही)
- (ख) उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में कोई जनजातीय समुदाय नहीं था। (गलत)
- (ग) गोंड राज्यों में अनेक नगरों को मिला कर चौरासी बनता था। (गलत)
- (घ) भील, उपमहाद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में रहते थे। (गलत)

प्रश्न 4 खानाबदोश पशुचारकों और एक जगह बसे हुए खेतिहरों के बीच किस तरह का विनिमय होता था ?

उत्तर – खानाबदोश पशुचारक अपने जानवरों के साथ दूर दूर तक घूमते थे। उनका जीवन दूध और अन्य पशुचारी उत्पादों पर निर्भर था। वे खेतिहर ग्रहस्थों से अनाज, कपड़े, बर्तन और ऐसी ही चीजों के लिए ऊन, घी इत्यादि का विनियम भी करते थे। कुछ खानाबदोश अपने पशुओं के ऊपर समान ढुलाई का काम भी करते थे।

प्रश्न 5 अहोम राज्य का प्रशासन कैसे संगठित था ?

उत्तर - अहोम लोग मौजूदा म्यांमार से आकर तेरहवीं सदी में ब्रह्मपुत्र घाटी में आ बसे। उन्होंने भूस्वामी लोगों की पुरानी राजनीतिक व्यवस्था का दमन करके नए राज्य की स्थापना की। उन्होंने कई अन्य जन जातियों को भी अधीन कर लिया था। अहोमो ने एक बड़ा राज्य बनाया। और इसके लिए 1530 के दशक में ही, इतने वर्षों पहले आग्नेय अस्त्रों का इस्तेमाल किया। अहोम राज्य बेरोजगार पर निर्भर था। राज्य के लिए जिन लोगों से जबरन काम करवाया जाता था पाइक कहलाते थे। अहोम राज्य में एक जनगणना की गई थी कि प्रत्येक गांव को अपनी बारी आने पर निश्चित संख्या में पाइक भेजने होते थे। इसके लिए जनगणना के बाद सघन आबादी वाले इलाकों से कम आबादी वाले इलाकों में लोगों को स्थानांतरित किया गया था। इस प्रकार अहोम कुल टूट गए थे। सत्रहवीं शताब्दी का पूर्वार्ध पूरा होते होते प्रशासन खासा संगठित हो चुका था। अहोम समाज कुलों में विभाजित था, जिन्हें खेल कहा जाता था। एक खेल के नियंत्रण में कई गांव होते थे। किसान को अपने ग्राम समुदाय के द्वारा जमीन दी जाती थी। इस प्रकार अहोम गांव में सारा प्रशासन संगठित किया हुआ था।

प्रश्न 6 वर्ण आधारित समाज में क्या परिवर्तन आए ?

उत्तर - वर्ण आधारित समाज में नए परिवर्तन आए:-

वर्णों के भीतर छोटी - छोटी जातियाँ उभरने लगी। उदाहरण के लिए ब्राह्मणों के बीच नई जातियाँ सामने आईं। दूसरी ओर, कई जनजातियों और सामाजिक समूहों को जाति - विभाजित समाज में शामिल कर लिया गया और उन्हें जातियों का दर्जा दे दिया गया। विशेषज्ञता प्राप्त शिल्पियों जैसे:- लोहार, सुनार, बढ़ई और राजमिस्त्री को भी ब्राह्मणों द्वारा जातियों के रूप में मान्यता दे दी गई। वर्ण के स्थान पर जाति सामाजिक संगठन का आधार बनी।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 103)

प्रश्न 7 एक राज्य के रूप में संगठित हो जाने के बाद जनजातीय समाज कैसे बदला ?

उत्तर - एक राज्य के रूप में संगठित हो जाने के बाद जनजातीय समाज में कई तरह के बदलाव आए:-

हूँण, चन्देल, चालुक्य और कुछ दूसरी वंश परम्पराओं में से कुछ दूसरी परम्पराओं से आते थे। उनमें से कुछ पहले जनजातियों में आते थे और बाद में कई कुल राजपूत मान लिए गए। धीरे धीरे उन्होंने पुराने शासकों की जगह ले ली, विशेष रूप से कृषि वाले क्षेत्रों में। यहाँ कई तरह के परिवर्तन होते थे और शासकों से शक्तिशाली राज्यों के रूप में अपनी सम्पदा का इस्तेमाल किया। शासकों के रूप में राजपूत गोत्रों के उदय के उदाहरण का जनजातीय लोगों ने अनुसरण किया। धीरे धीरे ब्राह्मणों के समर्थन से कई जनजातियाँ भी जाति व्यवस्था का हिस्सा बन गईं, लेकिन केवल प्रमुख जनजातीय परिवार ही शासक वर्ग में शामिल हो सके। उनकी बहुसंख्यक आबादी, समाज के छोटे जातियों में ही अपनी जगह बना पाई।

SHIVOM CLASSES
8696608541